Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

नेट पर उपलब्ध :
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 R.N.I. No. 66400/97

खुदरा व्यापार में विदेशी दैत्यों को न्योता	3
अंधी गली में अंधे मोड़ पे राजनीति	4
उम्मीद जगाता बांग्लादेश का युवा आन्दोलन	6
राष्ट्र का नया बोध	7

वर्ष 26 अंक 11 फरीदाबाद, सोमवार, 16-31 अप्रैल 2013 फोन : - 9999595632 सहयोग राशि 2 रुपया

प्रदूषण बढ़ाता नियन्त्रण बोर्ड

बना जनता को लूटने का हथियार

फ़रीदाबाद (म. मो.) यूं तो हरियाणा सरकार का प्रत्येक विभाग जनता को लूटने और परेशान करने में जुटा है, परन्तु हरियाणा प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड जनता को लूटने के साथ-साथ पर्यावरण को दूषित कराने में भी जुटा है। देश के सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर बने (सी पी सी बी) केन्द्रीय प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशा निर्देशों पर चलने की आड़ में हरियाणा प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड सभी नियमों, कायदे-कानूनों की धज्जियां उड़ाते हुए केवल लूट के एक सूत्री कार्यक्रम में जुटा है। इस बोर्ड द्वारा बनाये गये कायदे-कानूनों के अनुसार कोई भी छोटा बड़ा अस्पताल अथवा छेटे से छोटा क्लीनिक भी अपने बायो-वेस्ट (कचड़े) के निस्तारण के लिये बोर्ड द्वारा अधिकृत किसी फ़र्म अथवा व्यक्ति को कचड़ा निस्तारण का ठेका देगा। इसके बदले ठेकेदार फ़र्म अस्पताल से उसके आकार के अनुसार मासिक वसूली करेगी। बादशाह खान जैसा सरकारी अस्पताल इसके लिये 40 000 तो एसियन जैसा 50 000 रुपया मासिक देता है। दो दो हज़ार मासिक देने वाले छोटे-छोटे क्लीनिकों की गिनती अलग से। ठेकेदार को मंथली न देने वाले के विरुद्ध बोर्ड द्वारा कड़ी कार्यवाही का कानूनी डंडा

दिखाया जाता है। इस लूट के लिये, गुड़गांव सहित 6 ज़िलों का ठेका बोर्ड ने वल्कन नामक फ़र्म को दिया हुआ है। इसके जरिये वह 70 लाख रुपए से अधिक की मंथली वसूली करती है। इसकी लूट के क्षेत्राधिकार में आने वाले ज़िले हैं-गुड़गांव, फ़रीदाबाद, पलवल, मेवात, रेवाड़ी तथा नारनौल। इन ज़िलों के अस्पतालों से निकलने वाला कुल कचड़ा, सी पी सी बी की रिपोर्ट अनुसार 3 टन प्रतिदिन बताया जाता है। जबकि इसके प्लांट की कुल क्षमता 150 किलोग्राम प्रति घंटे की है। 800 से 1100 डिग्री सेंटिग्रेट तापमान पर चलने वाला यह प्लांट 10 घंटे से अधिक प्रतिदिन चल ही नहीं सकता। इस हिसाब से प्लांट की निस्तारण क्षमता 1500 किलोग्राम यानी कुल डेढ टन प्रतिदिन की हुई बाकी बचे डेढ़ टन कचड़े का क्या होता है? कोई पूछनेवाला नहीं।

शेष पेज 2 पर

भाजपा ने अपना दुर्योधन चुन लिया?

मोदी लाइलाज मर्ज बनेगा या राहुल चक्रव्यूह तोड़ेगा

मोदी : दुर्योधन का शासन?

राहुलः अभिमन्यु भेदेगा चक्रव्यूह?

दिल्ली (म.मो.) राजधानी में महाभारत की तैयारी है। भाजपा में नरेन्द्र मोदी के हाथ कमान सौंपने की हवा चल पड़ी तो कांग्रेस में राहुल गांधी के इतर देखने का वैसे भी रिवाज नहीं है। जब बात महाभारत की हो तो चरित्र भी उन्हीं प्रसंगों के सामने आते हैं। भाजपा को गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में दुर्योधन मिल गया है। जबकि चुनावी चक्रव्युह में राहुल गांधी की हालत अभिमन्यु वाली बनती नज़र आती है। पौराणिक महाभारत के मुकाबले इस बार फ़र्क यह हो सकता है कि दुर्योधन भी विजयी बन सकता है और अभिमन्यु भी चक्रव्युह तोड़ सकता है। जैसे जैसे चुनावी हवा का रुख स्पष्ट होता जायेगा, इस अन्तर के यथार्थ से भारतीय जनता का वास्ता भी सामने आता जायेगा।

महाभारत में कौरवों के पास शिखंडी नहीं था पर मोदी के पास भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह के रूप में शिखंडी भी मौजूद है, जिसका इस्तेमाल वह आडवाणी (भीष्म पितामह?) समेत किसी पर भी कर सकते हैं।)

आइये पहले दुर्योधन पर नज़र डालें क्योंकि महाभारत-काल में भी पहले दुर्योधन प्रसंग ही जीवन्त हुआ था। नरेन्द्र मोदी की रणनीति पहले अपने पक्ष के वरिष्ठों एवं समकक्षों को ठिकाने लगाने की रही, जैसे दुर्योधन की थी। लिहाजा आडवाणी, अरुण जेटली, सुषमा सवराज, नितिन गडकरी जैसों को धीरे-धीरे चुप होते जाना है। इसके बाद बारी आयेगी सहयोगियों की। या तो नितीश कुमार जैसों को अलग रास्ते पर जाना पड़ेगा और या राज ठाकरे, जयललिता, ममता बनर्जी, विश्व हिन्दू परिषद, राष्ट्रय स्वयं सेवक संघ जैसों को मोदी की विरुदावली गानी पड़ेगी। महाभारत में कौरवों के पास शिखंडी नहीं था पर मोदी के पास भाजपा अध्यक्ष राजनाथ सिंह के रूप में शिखंडी भी मौजूद है, जिसका इस्तेमाल वह आडवाणी (भीष्म पितामह?) समेत किसी पर भी कर सकते हैं।

शेष पेज 2 पर

ख़बर दार

लड़ाई : भ्रष्टाचार से अन्ना की, काले धन से बाबा की, राजनीतिज्ञों से केजरीवाल की

तीनों लड़ाइयां जारी हैं। तीनों के मुद्दे भी सही एवं समाज के मतलब के हैं। अलग-अलग समय में जनता ने तीनों के मोर्चों को जम कर सहयोग भी दिया। पर ये लड़ाइयां कहीं पहुंची क्यों नहीं? ये अधूरी क्यों नज़र आती हैं? इनका भविष्य क्या है?

तीनों मोर्चों में एक अत्यन्त सम्मानजनक नाम शामिल रहा है। यह शख्स है- उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश एवं कर्नाटका के पूर्व लोकायुक्त संतोष हेगड़े। आज वे इन तीनों मोर्चों में से किसी पर भी नज़र नहीं आते।

एक निजी बातचीत में उन्होंने अन्ना को गांधीवादी, रामदेव को व्यवसायी और केजरीवाल को महत्वाकांक्षी बताया था। ताज्जुब नहीं कि गांधीवादी अन्ना की, ऊपरी दिखावे के बाबजूद, न बाबा से

पटी और न केजरीवाल से निभ सकी। अन्ना हजारे ने लोकपाल को प्रमुख मुद्दा बना रखा है। उनके तर्कों को यदि सीधेतौर पर देखा जाय तो वे यह कहते प्रतीत होते हैं कि भ्रष्टाचार रूपी दानव को समाप्त करने के लिये लोकपाल के रूप में एक सुपरमैन को लाना होगा। अन्ना का लोकपाल, अगर उसे वे सारी शक्तियां व छूटें दे दी जायें जितनी मांग अन्ना ने की है, एक ऐसा निरंकुश शक्ति केन्द्र सिद्ध होगा जो दुरूपयोग के नये कीर्तीमान बनाने की दिशा में चल पड़ेगा। रही बात सत्याग्रहों से इस परजीवी एवं शोषक व्यवस्था की भ्रष्टता को बदल पाने की तो वह तो स्वंय गांधी जी भी नहीं कर सके थे।

उनका ट्रस्टीशिप का सपना, जिसमें धनी का फ़ालतू पैसा कमज़ोर एवं लाचार के लिये कल्याणकारी ट्रस्ट का काम करे, सपना ही रह गया। भ्रष्टाचार की जड़ में केवल भ्रष्टाचारी ही नहीं होता कि उसे लोकपाल से सज़ा दिलवा कर मामला निपटाया जा सकता है और जनता को निजात मिल सकती है। मामला कहीं इससे भी बहुत गहरा है और जनता की पीड़ा भी बाहुस्तरीय है इन पर पार पाने के लिये व्यवस्था में आमूल परिवर्तन की जरूरत है। यह परिवर्तन व्यवस्था की नीयत से लेकर व्यवस्था के ढांचे, उसकी प्राथमिकतायें, उसे चलाने के तौर तरीके, योजना एवं विकास के रास्ते, और इन सब में जनता की भागीदारी की सुनिश्चितता पर निर्भर करता है।

शेष पेज 2 पर